Vijay Kumar Jha
Asst Prof.
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar

Role of Mustafa Kamal Pasha in Turkish Republic.

आधुनिक रूस के इतिहास में जो स्थान लेनिन का है, चीन में माओ, सेनयात, वही आधुनिक तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा का है। पाशा ने अपने देशवासियों को राष्ट्रवाद, देशभक्ति एवं तुर्की में नवजागरण का संचार किया। उसका जन्म 1881 ई० में सेलोनिका के एक साधारण परिवार में हुआ था। उसके पिता अली रजा एफेन्दी एक सामान्य सरकारी कर्मचारी थे। प्रथम विश्व युद्ध में वह एक सेनानायक कि हैसियत से अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। लेकिन तुर्की के युवा तुर्क नेता से उसका मतभेद था जिसके कारण उन्हें कुछ दिनों के लिये इस पद से हटना पड़ा। फिर भी उसकी ख्याति में कोई कमी नहीं आया। अंग्रेज कमाल पाशा को घृणा की दृष्टि से देखते थे। तुर्की के सुल्तान भी मुस्तफा कमाल पाशा से जलते थे। अतः पाशा को सुल्तान ने अनातोलिया इन्सपेक्टर जेनरल बनाकर भेज दिया। पाशा के लिये यह एक अच्छा अवसर मिला और उसने अनातोलिया में अपने कुछ समर्थकों को लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन कि तैयारी करने लगे। अनातोलिया में सभी फौजी अफसरों को मिलाने कि कोशिश किया गया। इटली और फ्रांस ने 1915 ई० में हुये गुप्त समझौते को पूरा करने के लिये क्रमशः स्मरना पर अधिकार करने के लिये सेना भेज दिया। इससे तुर्की अत्यन्त क्रोधित हुये। मौके उपयुक्त मिलने के कारण पाशा ने तुर्की के लोगों को इन विदेशियों के विरुद्ध उकसाया और उनसे राष्ट्रीय आन्दोलन कि अपील कि। फलतः बहुत से तुर्क अफसर जगह जगह पर राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गया।

1920 ई० में प्रथम विश्व युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने तुर्की के साथ सेव्र कि संधि की थी जो तुर्की पर थोपी गई संधि थी। कमाल पाशा ने इस संधि का विरोध किया। कमाल पाशा तुर्की के सुल्तान का विरोधी था। उसने पहले सुल्तान को ठीक रास्ते पर लाना चाहा किन्तु जब सुल्तान नहीं माना तो

MAY 2019
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Scanned with Cam

ने प्रत्यक्ष रूप से पाशा सुल्तान के विरोधी बन गये।

पाशा तुर्की को मित्र राष्ट्रों के चंगुल से मुक्त करना चाहते थे तुर्की के राष्ट्रवादी एवं देश भक्त लोग मुस्तफा कमाल पाशा का समर्थन किया। शीघ्र ही अनातोलिया में एक समानान्तर सरकार की स्थापना हुई जिसकी राजधानी अंकारा बनाई गई। 23 अप्रैल 1920 ई० को अंकारा में प्रथम महान राष्ट्रीय सभा की बैठक हुई जिसमें कमाल पाशा को राष्ट्रीय सेना का सेनापति नियुक्त किया गया। यह घोषणा किया गया कि तुर्की जनता का प्रतिनिधि होने के कारण राष्ट्रीय सभा ही तुर्की का शासन करें। यह भी निश्चित हुआ कि एसेम्बली के सदस्यों का चुनाव चार वर्षों के लिये हो। 18 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले ही वोट देने के अधिकारी हैं। इस समय तुर्की के सुल्तान मित्रराष्ट्रों के प्रभाव में था अतः सुल्तान तुर्की जनता से अंकारा कि नई सरकार से कोई संबंध नहीं रखने का अपील किया पर जनता ने सुल्तान के घोषणा पर ध्यान नहीं दिया और वे राष्ट्रीय भावना में बहते रहे।

उस समय तुर्की के पांच ~~शक्ति~~ शत्रु थे - आरमीनिया, इटली, फ्रांस, रूस और इंगलैण्ड। रूस कि सरकार ने अंकारा सरकार को मान्यता दे दी जिसके बदले में अंकारा कि सरकार ने रूस को विदेशियों के विरुद्ध अस्त्र शस्त्र से मदद का आश्वासन दिया। कमाल पाशा ने आरमीनिया पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया तत्-पश्चात पाशा कि सेना ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इटली ने अंकारा सरकार से गुप्त संधि कर ली। अब सिर्फ यूनान एवं इंगलैण्ड ही ऐसे देश थे जिन्हें पाशा से युद्ध करना था किन्तु यूनान भी पराजित होने के भय से संधि कर लिया। अब मात्र इंगलैण्ड ही बचे थे, इंगलैण्ड जानता था कि तुर्की को रूस का सहारा प्राप्त है अतएव वह रूस एवं तुर्की से मुकाबला नहीं कर सकते थे अतः सेव्र कि संधि के जगह इंगलैण्ड लोजान नामक जगह पर तुर्की से एक नई संधि किया जिसे लोजान संधि कहते हैं। इसके लिये स्वीटजरलैण्ड में एक सभा बुलाया गया जिसमें निर्णय लिया गया कि मुस्तफा कमाल पाशा के सरकार ही तुर्की कि एकमात्र सरकार है क्योंकि 1922 ई० में

युद्ध समाप्त के पूर्व ही सुल्तान मोहम्मद तुर्की छोड़कर भाग गया था। इस स्थिति में जान्ना कि सरकार के साथ ही २४ जुलाई 1923 ई० में लोजान कि संधि हुई। इस संधि के अनुसार तुर्की राष्ट्रवादियों ने नेशनल पैक्ट में जो कुछ भी रखी वह इंग्लैंड स्वीकार कर लिया। यूरप में तुर्की को अनातोलिया, कुस्तुन्तुनिया और पूर्वी प्रदेशों पर अधिकार माना गया। तुर्की पर लगाये गये सभी आर्थिक और सैनिक प्रतिबंध्य समाप्त कर दिये गये। इसके द्वारा मुस्तफा पाशा कि सरकार को राष्ट्रीय मान्यता मिल गई। न्याय, कानून, सैनिक और आर्थिक मामला आदि में तुर्की ने विदेशी प्रभाव को पूर्णत: समाप्त कर दिया गया।

विश्वयुद्ध के बाद लोजान कि संधि ही ऐसी थी कि दोनों पक्षों के मध्य आपसी सममौते से तय हुआ था। तुर्की कि राजनीतिक क्षेत्रफल अब काफी बढ़ गई थी। लोजान कि संधि यूरपीय देशों के लिए जहर के घूंट के समान थी। किंतु इसे पीना ही पड़ा।

२९ oct 1923 ई० को दिन तुर्की को गणतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। सर्व सम्मति से मुस्तफा कमाल पाशा को तुर्की गणराज्य का राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया। तुर्की कि राजधानी कुस्तुन्तु-निया से हटाकर अंकारा बनाया गया। 1924 ई० में खिलाफत के शासन का भी अंत कर दिया गया। शासन को धर्म से स्वतंत्र अलग कर दिया गया पुराने काजियों का न्याय संबंधी अधिकार भी छीन लिये गये। 1924 ई० में तुर्की गणराज्य के लिये एक नये संविधान कि घोषणा की गई तथा तुर्की में एक लोकप्रिय धर्म निरपेक्ष गणराज्य की स्थापना किया गया। तुर्की कि राष्ट्रीय अखंडता तथा राजनीतिक स्वतंत्रता कायम रहा और तुर्की एक सम्मानित राष्ट्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा हासिल कर लिया।

MAY 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Scanned with Cam